Spinoza - Epistemology

ज्ञानमीमांसा

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

स्पिनोजा एक बुद्धिवादी दार्शनिक हैं, इनके दर्शन में भी डेकार्ट की तरह बुद्धि की ही प्रधानता है।ज्ञान जन्मजात प्रत्यय के रूप में हमारे बुद्धि में निहित होते हैं और इनका स्पष्ट बोध ही ज्ञान है।**स्पष्टता(Clearness),निश्चितता(Necessity)और सार्वभौमिकता(Univrsality)** सत्य ज्ञान के लक्षण हैं।स्पिनोजा ने कहा है कि, **"ज्ञान का स्पष्ट तथा निःसन्देह होना ही उसका आन्तरिक गुण है" (The intrinsic marks of truth or an adequate idea is clearly, distinctness and certitude beyond all doubts)।**इस तरह निःसंदेह तथा स्पष्ट ज्ञान ही सत्य ज्ञान है।

स्पिनोजा के अनुसार ज्ञान के तीन स्तर हैं जो निम्नलिखित हैं : -

1.अस्पष्ट तथा अपर्याप्त प्रत्यय (Obscure and Inadequate Ideas) - ये प्रत्यय सम्बेदना तथा कल्पना के द्वारा निकलते हैं।स्पिनोजा के अनुसार वे सभी ज्ञान जिसे व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों के आधार पर प्राप्त करता है इसके अंतर्गत आते हैं।काल्पनिक ज्ञान से उनका तात्पर्य उन सभी ज्ञानों से है जिन्हें इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया जाता है इसलिए इसे इन्द्रियजन्य ज्ञान भी कहा जाता है।पंचेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान बाह्य प्रत्यक्ष और मानसिक सम्बेदना द्वारा प्राप्त ज्ञान आन्तरिक प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।विश्लेषणात्मक बुद्धि के द्वारा प्राप्त ज्ञान जिनमें कोरी कल्पना सम्मिलित होते हैं, इसी स्तर के ज्ञान के श्रेणी में आते हैं।यह ज्ञान अपूर्ण तथा व्यक्तिक होता है।

2 स्पष्ट और विशिष्ट प्रत्यय(Clear and Distinct Ideas) - स्पष्ट तथा विशिष्ट प्रत्यय बौद्धिक ज्ञान से प्राप्त होते हैं। यह हमारी व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित नहीं होता बल्कि बुद्धि पर आधरित होता है। इस स्तर का ज्ञान हमें वस्तुओं का सार तथा ईश्वर से उनके संबंध के बारे में ज्ञान होता है ।इस तरह के ज्ञान के अंतर्गत हम बौद्धिक विश्लेषण कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं मिसाल के तौर पर हम अपने व्यावहारिक जीवन में पाते हैं कि मनुष्य मरता है और जब हम बार-बार इसी घटना को देखते हैं तो प्रकृति समरूपता नियम के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि प्रत्येक मनुष्य मरणशील है ।यह ज्ञान प्रथम

ज्ञान की भांति और असम्बद्ध नहीं है बल्कि सुसम्बद्ध है । यह भिन्नता का सूचक नहीं बल्कि अभिन्नता का सूचक है। इस स्तर में भेद में अभेद का तथा द्वैत में अद्वैत का ज्ञान होता है। इसमें हमें प्रत्येक वस्तु के स्वरूप का पृथक पृथक ज्ञान ही नहीं होता ,बल्कि उसमें पारस्परिक एकता प्रतीत होता है । इस स्तर में ईश्वर के विश्वरूप और विश्वात्मरूप का ज्ञान होता है।

3 अपरोक्षानुभूति (Intuitive Knowledge) - अपरोक्षानुभूति को स्पिनोजा ने सबसे उच्च ज्ञान माना है।स्पिनोजा ने कहा है कि,**"वह ईश्वर के किन्हीं गुणों वस्तुगत सार के अपर्याप्त विचार से वस्तुओं के पर्याप्त सार की ओर आगे बढ़ती है"।** यहां ज्ञान के विषय हमारे समक्ष होते हैं जिनका ज्ञान हमें सीधे तौर पर होता है इसमें किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती प्रथम एवं द्वितीय स्तर ज्ञान का स्तर है पर यह इन दोनों से भिन्न सहज बोध का स्तर है । सहज बोध के आधार पर हम ज्ञान प्राप्त करते हैं कि हमारे अंदर आत्मा निहित है या फिर हमारी सारी क्रियाओं का संचालक कोई असीम सत्ता है अतः इसे ईश्वर बोध का स्तर माना गया है। यह ज्ञान कार्य रूप विश्व का नहीं बल्कि कारण रूप ईश्वर का ज्ञान है। ज्ञान के इस स्तर से हमें ईश्वर के अद्वितीय ,निर्गुण और अनिर्वचनीय रूप का निर्विकल्प स्वानुभूति द्वारा साक्षात्कार होता है । ज्ञान की इस अवस्था में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का भेद मिट जाता है । यह मानव की पूर्णानंद की अवस्था है।स्पिनोज़ा तृतीय स्तर के ज्ञान को प्रथम और द्वितीय स्तर के ज्ञान की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक मानते हैं।इसके द्वारा हमें सत्य का सीधे साक्षात्कार होता है। कभी-कभी यह भी प्रश्न उठाया जाता है कि क्या संसार के सभी वस्तुओं का ज्ञान सहजबोध द्वारा सम्भव है ? इस सम्बंध में स्पिनोजा ने कहा है कि,**"कुछ ऐसे ज्ञान हैं जिनकी प्राप्ति का एकमात्र आधार सहजबोध ही हैं और ऐसे ज्ञान थोड़े ही हैं"(The things which I have been able to know by the knowledge to for have been very few)**